

त्रिपुरा में कला और हिंदी

- डॉ. अमिता मिश्र

त्रिपुरा, पूर्वोत्तर भारत का छोटा और मनोरम पहाड़ी प्रदेश है। यह प्रदेश घने जंगलों, पहाड़ों, नदियों, जलप्रपातों से आच्छादित है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यहाँ की जलवायु अत्यंत लाभप्रद है। त्रिपुरा महान संगीतकार देववर्मन की जन्मभूमि है। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार त्रिपुरा नामक जनजाति के नाम पर इस राज्य का नाम त्रिपुरा रखा गया।

त्रिपुरा के पत्रकार ज्योति प्रसाद सैकिया ने पहली बार पूर्वोत्तर के इन सात राज्यों को 'सात बहनों' के नाम से पुकारा था। इंद्रधनुष के सात रंगों का समावेश इन्हीं सात राज्यों में है।

यह भारत का तीसरा सबसे छोटा राज्य है जैसा कि महाभारत में उल्लेख है कि त्रिपुरा का प्राचीन नाम 'किराट देश' है। यह एक कृषि प्रधान राज्य है। इसकी आधी से अधिक आबादी कृषि पर और उससे जुड़े संसाधनों पर आश्रित है। काफी लंबे समय तक यहाँ पर माणिक्य वंश का शासन रहा तथा बाद में अंग्रेजों के समय में यह एक स्वतंत्र रियासत बना जो 1949ई. में भारत से मिल गया। यहाँ पर मौसमी बारिश काफी अधिक मात्रा में होती है, जिसकी वजह से इस प्रदेश में वन अधिक हैं। पहाड़ी इलाकों और वनों के कारण केवल 27% भूमि ही खेती के लिए उपलब्ध है। चावल यहाँ की मुख्य फसल है।

रबड़ और चाय इस राज्य की नकदी फसलें हैं। देश में प्राकृतिक रबर के उत्पादन में त्रिपुरा का केरल के बाद दूसरा स्थान है।

त्रिपुरा की राजधानी अगरतला 'होआरा' नदी के तट पर बसा है इसे 1760ई. में त्रिपुरा राजघराने की राजधानी बनाया गया था। शहर के अधिकांश पुराने निर्माण जैसे महल, सड़कें, तालाब इत्यादि महाराजा कृष्णकिशोर माणिक्य ने करवाए थे। यहाँ का 'उज्जयन्त महल' भारतीय अरबी स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना है। इसके विशालकाय गुम्बद और नक्काशीदार दरवाजे मन मोह लेते हैं। महल में हाथीदाँत से बना विख्यात राज सिंहासन भी है। अगरतला से बांग्लादेश बेहद नजदीक है इसकी दूरी बमुश्किल 2-3 किमी. ही होगी। दोनों ओर के लोगों की भाषा और रहन-सहन काफी मिलते-जुलते हैं। शाम को 5 बजे भारतीय सीमा सुरक्षा बल तथा बांग्लादेश राइफल्स के जवान अपने-अपने राष्ट्रध्वज उतारते हैं जिसे देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग यहाँ पहुँचते हैं।

त्रिपुरा राज्य अपने हस्तशिल्प में विशेष रूप से हाथ से बुने हुए सूती कपड़े, लकड़ी की नक्काशी और बाँस के उत्पादों के लिए जाना जाता है। साल, गर्जन और सागौन की उच्च गुणवत्ता वाली इमारती लकड़ी त्रिपुरा के जंगलों में बहुतायत से पाई जाती है। यहाँ प्राकृतिक गैस के भंडार भी हैं। त्रिपुरा में फैली अनगिनत झीलें और हरियाली इसे मनमोहक बनाती हैं। कुल मिलाकर त्रिपुरा राज्य प्राकृतिक सम्पदाओं से भरा हुआ है। लोग कठिन परिश्रम करने वाले हैं।

त्रिपुरा बाँस और बेंत हस्तशिल्प के लिए विख्यात है। बाँस की लकड़ी और बेंत का उपयोग फर्नीचर, बर्तन, हाथ वाले पंखे, चटाई, टोकरियाँ, मूर्तियाँ और आंतरिक सजावट की सामग्री बनाने के लिए किया जाता है।

त्रिपुरा राज्य में हथकरघा सबसे पुराना उद्योग है। त्रिपुरा की जनजातियाँ अपने लिए कपड़े स्वयं बुनती हैं। रिहा और रिसा यहाँ की दो प्रसिद्ध कपड़ा निर्माण सामग्री हैं, जिनसे कपड़े बुने जाते हैं। यह हस्तशिल्प पूरे राज्य में फैला हुआ है। यहाँ बनाई जाने वाली वस्तुओं में चटाइयाँ, झोले, मूरा, फल की टोकरियाँ और फूलदान प्रमुख हैं। यह कलाएँ अगरतला शहर के अलावा कैलासहर, धर्मनगर, खोवाई, सदर, सुआ मोरा तक फैली हैं। त्रिपुरा में बाँस की चटाई का फलता- फूलता उद्योग है। यहाँ पर बाँस की चटाई को मीटर के हिसाब से बेचा जाता है। चटाई की कीमत बाँस के चीरे की बारीकी, चटाई की चौड़ाई, तानों की संख्या और रंग पर निर्भर करती है। इस बाँस की चटाई से अनेक उत्पाद जैसे कि पंखे, लैंपस्टैंड, हैंडबैग तथा अनेक सजावटी वस्तुएँ बनाई जाती हैं। बाँस से बनती वाली सबसे सरल सजावटी वस्तु वाल- हैंगिंग है। चटाई से जो टुकड़े बच जाते हैं उससे फूल की छड़ियाँ बनाई जाती हैं। बाँस से बनी मेज की चटाई सर्वाधिक लोकप्रिय उत्पादों में से एक है। कुछ चटाइयों पर स्थानीय कलाकार तेल चित्र भी बनाते हैं। बाँस के फूलदान, लैंपस्टैंड, मग, पेन्सिल इत्यादि अन्य सामान भी इससे बनाये जाते हैं।

बाँस व बेंत की टोकरियाँ भी यहाँ युनी जाती हैं। जिनका इस्तेमाल ईंधन की लकड़ी तथा अनाज ढोने के लिए किया जाता है। इसके अलावा और कई प्रकार की टोकरियाँ बनाई जाती हैं जिनका उपयोग भिन्न भिन्न कार्यों के लिए किया जाता है।

त्रिपुरा की रियांग जनजाति के लोग तंबाकू पीने के लिए एक बड़े हुक्के का प्रयोग करते हैं जो बाँस की नली और मिट्टी से मिलकर बना होता है।

पूर्वोत्तर में अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं जिनकी अपनी अपनी भाषाएँ तथा बोलियाँ हैं। सभी राज्यों में हिंदी का प्रयोग अधिकांश प्रवासी हिंदी भाषियों द्वारा किया जाता है।

सर्वप्रथम 1934ई. में गांधीजी ने हिंदी के उत्थान के लिए इन प्रदेशों में अलख जगाया था जिसकी मशाल निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। 'राजमाला' पुस्तक में इस बात का वर्णन मिलता है कि यहाँ के राजा ने करीब 200 साल पहले हिंदी में कविताएँ लिखी थी ये राजा धर्मदेव माणिक्य बनारस में रहा करते थे।

त्रिपुरा में जो वर्तमान शिक्षा का माध्यम है उसमें बांग्ला माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षित किया जाता है। बांग्ला और कॉकबराँक त्रिपुरा की राजभाषा है पर पिछले दो दशकों में हिंदी की स्थिति में गुणात्मक सुधार आया है। सभी गैरसरकारी स्कूलों में हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। नवोदय विद्यालयों में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। कुछ महाविद्यालयों में हिंदी आनर्स और हिंदी पास कोर्स पढ़ाया जाता है।

व्यावसायिक, कारोबारी, रिक्शाचालक, नर्स, कुलियों, मजदूरों तथा सेना के मध्य हिंदी का प्रयोग काफी होता है पर अभी भी सरकारी कामकाज अंग्रेजी भाषा में ही होता है। यद्यपि 2006ई. में स्थापित त्रिपुरा

विश्वविद्यालय के द्वारा हिंदी का लगातार प्रचार-प्रसार हो रहा है। हिंदी को लगातार यहाँ बढ़ावा मिल रहा है पूर्वोत्तर राज्य के लेखक प्रचलित लोक कथाओं, लोकगीतों का हिंदी अनुवाद कर रहे हैं जिससे यहाँ का साहित्य समस्त देशवासियों तक पहुँच रहा है। देवनागरी लिपि में लिखने की प्रवृत्ति का लगातार संवर्धन हो रहा है। आजकल हिंदी, बाजार और नौकरियों की भाषा हो गई है। अतः इस क्षेत्र में भी हिंदी लेखन बढ़ रहा है। त्रिपुरा में रमेन्द्र पाल, डॉ. मिलन रानी जमातियाँ, डॉ. विनोद कुमार प्रमुख कार्य कर रहे हैं। हिंदी का वर्चस्व इन रचनाकारों के कारण लगातार बढ़ रहा है। साथ ही स्वैच्छिक हिंदी संस्थानों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है।

त्रिपुरा राज्य में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने 'त्रिपुरा राष्ट्रभाषा विचार समिति' की स्थापना की जिसका मुख्यालय धर्म नगर रखा गया। त्रिपुरा में संचालित स्वैच्छिक हिंदी संस्था के लगभग दस केंद्र संचालित हैं, जहाँ प्रारंभिक स्तर पर हिंदी पढ़ाई जाती है।

त्रिपुरा राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अगरतला स्वैच्छिक संस्था है आज इस प्रदेश में हजारों की संख्या में युवा हिंदी पढ़ रहे हैं। यहाँ हिंदी को समझने वाले काफी लोग मिलते हैं उसकी बनिस्बत बोलने वालों की संख्या कम है जिसे हिंदी के वर्तमान कार्यो द्वारा निरन्तर पूरा किया जा रहा है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में यहाँ आने वाले व्यापारियों का भी योगदान रहा है। वे जब यहाँ व्यापार के लिए आए तो अपने साथ अपनी भाषा भी लाए मारवाड़ी इनमें मुख्य रहे हैं। हिंदी को लोक से जोड़ने में हिंदी फिल्मों, गानों, दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता। यहाँ के लोग हिंदी फिल्मों को खूब खुशी खुशी देखते हैं। इसने लोगों को बोलचाल की हिंदी सिखाई।

साथ ही सेना तथा ओएनजीसी द्वारा के कराए जा रहे कार्यक्रमों द्वारा भी हिंदी का प्रचार होता रहा है इनके द्वारा आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में यहाँ के बच्चे बेहद दिलचस्पी से भाग लेते हैं। वर्तमान समय में हिंदी का परिवार विस्तृत हो रहा है।

आदिवासी साहित्य में स्त्री का स्थान किसी भी स्तर पर पुरुष से कम नहीं पाया जाता है। इनका मौखिक साहित्य आदिवासी मिथक, किवदंतियों व लोकोक्तियों में मिलता है। कवयित्री करैरी मॉम चौधरी' अपनी कविता 'आत्मा की चीख' में लिखती हैं-

समय आ गया है कि छेड़े एक नई जंग

आदमी को चाहिए

खोजना एक वरदायी गगन

बदलनी होगी प्रतिरोध की भाषा

साहित्य में निरन्तर बदलाव की बयार देखी जा सकती है। आगामी समय में इसे और उन्नत बनाया जा सकता है।

पूर्वोत्तर की विभिन्न जनजातियों में एकात्मकता का भाव जगाने के उनकी धार्मिक मान्यताओं प्राचीन संस्कृति, भाषा साहित्य अपनी वेशभूषा के प्रति अनुराग को बनाए रखने के लिए 'जनजाति फेथ एंड कल्चर प्रॉडक्शन फोरम' नामक संस्था काम करती है।

आदिवासियों की ईमानदारी, उन्मुक्तता, सच्चाई, सह- अस्तित्व की भावना, साहस, जुझारूपन और लोकतांत्रिक समाज के प्रति उनका समर्पण साफ झलकता है संगीत और नृत्य त्रिपुरा राज्य की संस्कृति के महत्वपूर्ण घटक हैं। प्रत्येक समुदाय के पास सदियों, धार्मिक अवसरों तथा अन्य उत्सवों के दौरान आयोजित होने वाले गीतों और नृत्यों की अपनी पहचान है। राज्य की एक बड़ी जनजाति रियांग अपने 'होजगिरी' नृत्य के लिए प्रसिद्ध है। यह नृत्य मिट्टी के घड़े पर संतुलित ढंग से युवा लड़कियों द्वारा किया जाता है। आदिवासी समुदाय अपनी हर खुशी को नृत्य उत्सव के द्वारा ही व्यक्त करता है।

इनके नृत्यों में प्रमुख विझू नृत्य, बंगाला नृत्य, हक नृत्य, सँगवाई नृत्य और ओवा नृत्य हैं। ऐसे पारम्परिक संगीत के साथ-साथ मुख्य धारा के भारतीय शास्त्रीय संगीत और रवींद्र संगीत का भी अभ्यास किया जाता है। त्रिपुरा का संगीत वाद्ययंत्र जैसे- सुमुई. जो एक प्रकार की बाँसुरी होती है दूसरा 'रवंग' जो एक तरह का ड्रम होता है प्रमुख हैं। इसके अलावा यहाँ के वाद्ययंत्रों में तारा आधारित 'सांरिडा' और 'चोंगपाएँग' भी प्रमुख है। यहाँ के लोगों का 'गरिया' नृत्य एक प्रकार का धार्मिक नृत्य माना जाता है। रियांग समुदाय के लोग अपने 'होजगिरी' नृत्य के लिए प्रसिद्ध हैं साथ ही त्रिपुरी समुदाय का लिबांग नृत्य, चारु समुदाय का बिझू नृत्य, गारो समुदाय का वागला नृत्य, कुकी समुदाय का हाई हक नृत्य शामिल है।

इन नृत्यों में प्रमुख बिझू नृत्य, बंगाला नृत्य, हक नृत्य, संगराई नृत्य और ओवा नृत्य हैं- ये नृत्य त्योहारों और हँसी- खुशी के मौके पर किए जाते हैं। ऐसे पारंपरिक संगीत के साथ-साथ मुख्य धारा के भारतीय शास्त्रीय संगीत और रवींद्र संगीत का भी अभ्यास किया जाता है।

पहनावे में पुरुषों के लिए पारंपरिक पोशाक एक तौलिया होता है जिसे 'रिकतुगाचा' के रूप में भी जानते हैं। कुबे एक प्रकार की शर्ट होती है। त्रिपुरा में पुरुष कुबे के साथ रिकतुगाचा पहनते हैं। गर्मी के दौरान पुरुष गर्मी से बचने के लिए सिर पर पगड़ी पहनते हैं। महिलाएँ कमर में एक बड़ा कपड़ा पहनती हैं। जिसे घुटनों तक लपेटे रहती हैं इस कपड़े पर सुंदर हस्तकला की कढ़ाई होती है जिसे 'खाग्लू' कहा जाता है। गले में सिक्के और मोतियों से बने हार महिलाएँ पहनती हैं। राजधानी अगरतला में विभिन्न देवी- देवताओं को समर्पित अनेक मंदिर और देवस्थल हैं। दुर्गाबारी, काली बारी, जगन्नाथ बारी, शिव गली मंदिर इस बात को साक्ष्य हैं कि त्रिपुरा राज्य की संस्कृति में राजाओं का योगदान रहा है। त्रिपुरा की प्राचीन राजधानी उदयपुर में भी अनेक मंदिर हैं। मंदिरों की अधिकता के कारण इसे मन्दिरों का नगर भी कहा जाता है।

यह राज्य पत्थर की नक्काशी और मूर्तियों के लिए भी अत्यंत प्रसिद्ध है। नीरमहल इस राज्य का सांस्कृतिक जलमहल है इन मूर्तियों में आदिवासी समुदायों की झलक है। प्राकृतिक सौंदर्य में खूबसूरती बिखेरती डमबोर झील बेहद लोकप्रिय है यह झील कई प्रवासी पक्षियों का अस्थायी घर भी बनती है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. आदिवासी संस्कृति और साहित्य सत्येंद्र सिंह
2. पूर्वोत्तर सृजन 'मिथक और लोक कथाएँ'- संपादन संकलन : रमणिका गुप्ता
3. भारत के आदिवासी- प्रो. मधुसूदन त्रिपाठी
4. आदिवासी विमर्श केंद्रीय हिंदी निदेशालय
5. पूर्वोत्तर हिंदी संवाद
6. राजभाषा भारती, जनवरी मार्च 2016

नाम- डॉ. अमिता मिश्र

लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय